فروری ۲۰۱۳ء

ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَکَ وَتَعَالیٰ قَدْ جَاءَ کُمْ مِنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَکِتَابٌ مُبِیْنٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب



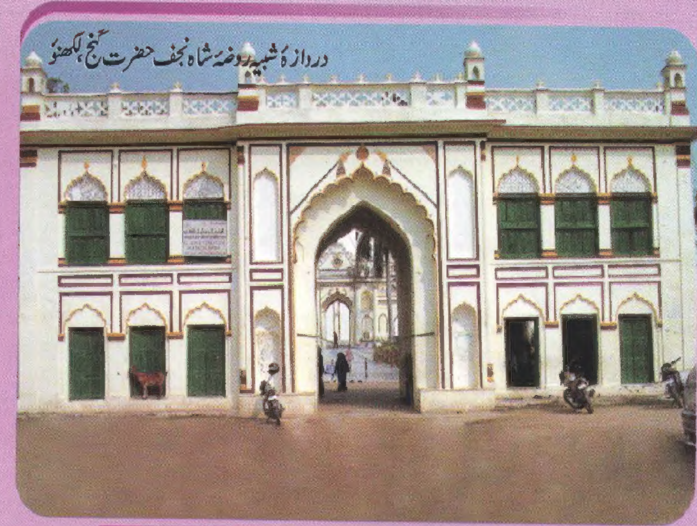
نورہدایت فاؤنڈیشن، حسینیہ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ-۳

PUBLISHED ON 4TH SUNDAY OF EVERY MONTH
R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2011-13 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL
Lucknow

शुआ-ए-अमल
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

February 2013





NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

बिस्मेही तआला

वर्ष 9 — अंक 8

न्यास संस्थापन

15 जमादिलऊला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलऊला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

पर्यवेक्षक:

मु० र० आबिद,

सलाहकार समिति

- प्रोफ़ेसर अल्लामा अली मुहम्मद नक़वी, अलीगढ़
- डॉ० महदी ख़्वाजा पीरी, ईरान
- सै० हसन अब्बास नक़वी, मुम्बई
- मौलाना हसन ज़फ़र नक़वी, कराची
- प्रोफ़ेसर हुसैन रुकनुद्दीन अकबर, इलाहाबाद
- कैप्टन सिकन्दर रिज़वी, लखनऊ
- सै० अहमद अब्बास नक़वी, मुम्बई
- शायरे अहलेबैत रज़ा सिरसिवी, सिरसी
- सै० सैफ़ रज़ा नक़वी, दिल्ली
- मुहम्मद आतिफ़, हुसैनाबाद, लखनऊ

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

फरवरी 2013

शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"

संरक्षक

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै. **कल्बे जवाद** नक़वी साहब

सम्पादक

सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

उप-सम्पादक

क़ायम महदी नक़वी 'तज़हीब' नगरौरी

सै० आसिफ़ अब्बास नौगांवी, हैदर अब्बास रिज़वी

मिलने का पता

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230 Mobile No: 09335276180 — 09335996808

Per Copy 20/-

Annual 200/-



R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526



Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10



WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.com
www.al-ijtihaad.com



E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

वार्षिक अंशदान

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः
80 अमरीकी डालर
2- ख़लीजी मुमालिकः
60 अमरीकी डालर
3- एशिया, पाकिस्तानः
40 अमरीकी डालर
4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः
20 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-

विषय सूची

फ़रवरी 2013ई०
रबीउल अव्वल 1434हि०

ज़िन्दगी का सिस्टम

लेखक : आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यिदुल उलमा सै0 अली नक़ी नक़वी ताबा सराह
सम्पादक : नूरे हिदायत फाउण्डेशन

क़िस्त 9

कोई मुसलमान अगर मज़हबी विश्वास से जुड़े शक और एतराज़ों को सामने लाता है तो सिर्फ़ इतने पर उसे काफ़िर नहीं समझ लेना चाहिये।

इन्सान के दिमाग़ को जब शोध का चस्का लग जाता है, और वह हर बात की दलील जानना और समझना चाहता है, फिर इन्सान की कल्पना शक्ति अकसर संदेह और शक को सामने लाती रहती है जिस में इन्सान का कोई बस नहीं होता अगर इस शक व शुबहे के पैदा होने के बाद शोध (Research) में कमी हुई और इस शक ने अक़ीदे विश्वास का रूपधार कर लिया तो वह कुफ़्र होगा जिस में हमेशा मरन है।

ज़रूरत है कि शक व शुबहे और एतराज़ जो दिमाग़ में घूमें उन्हें सामने लाया जाये और उस को दूर करने की कोशिश की जाये।

लेकिन अगर 'नास्तिकतावाद' इस हद पर रहा कि एतराज़ और शुबहे के कहने ही पर 'काफ़िर' (नास्तिक) की उपाधि मिल गयी तो किसी को हिम्मत ही काहे को हो गी कि वह अपने ख़्यालों को सामने ला कर संतोष पासके। नतीजा यह होगा कि वह ख़्यालात दिमाग़ में घूमते रहेंगे और एक वक़्त में विश्वास का रूप ले लेंगे। अब वह वाक़ई काफ़िर होगा, मगर उसकी ज़िम्मेदारी हो गी हमारे इस ग़लत तरीक़े पर।

पिछले काल दौर में अंग्रेज़ी शिक्षा के साथ जो बहुत से 'काफ़िर' पैदा हुए उसकी ज़िम्मेदारी बहुत ज़्यादा हमारे इस ग़लत तरीक़े पर है।

हम ने पहले ही यह समझ लिया कि अंग्रेज़ी शिक्षा काफ़िर ढालने की मशीन है। अब अगर किसी अंग्रेज़ी जानने वाले या जिज्ञासू ने कुछ भी शक वाले ख़्याल सामने किये तो हम ने छूटते ही उसे काफ़िर कह दिया।

नतीजा यह हुआ कि वह अब तक तो काफ़िर न था मगर हमारे इस कहने से हो गया। अगर उस ने हम से ख़यालों की लेन देन चाहा तो चूँकि हम समझते थे कि एक 'काफ़िर' हम से बात करना चाहता है, इस लिये या तो हम ने इस का मौक़ा ही न दिया या मौक़ा दिया भी तो विवाद (Debate) वाले जवाब दे कर उसे चुप करने की ज़यादा कोशिश की । हॉलाकि ऐसे जवाबों से विरोधी चुप तो हो जाता है मगर सत्य के एक खोजी के दिल की चुभन दूर नहीं होती। लेकिन हम तो यह समझकर बात करते थे कि यह आदमी सत्य का खोजी नहीं है, काफ़िर है जो हम को सिर्फ़ दिखाने के लिये हम से चाहे न चाहे बहस करना चाहता है।

नतीजा यह हुआ कि पढ़े लिखे वर्ग और धर्म विद्वानों के बीच की खाई बढ़ती गई। इन्हों ने उन के पास आना जाना छोड़ा उन्हों ने इनकी तरफ़ से मुंह मोड़ा।

शुक्र है कि इस हालत में अब बहुत हद तक सुधार हो गया है।

अक्सर अंग्रेज़ी कालिज और स्कूलों के छात्र मज़हबी मसलों का शोध करते हैं और संतोष पाते हैं। धर्म विद्वान के वाज़ में इस वर्ग के बहुत से लोग आते हैं और फ़ाएदा उठाते हैं। तरीक़े में बढ़ावा होना चाहिये और कभी ऐसा नहीं होना चाहिये कि किसी बड़े से बड़े एतराज़ के सामने लाने पर किसी को काफ़िर समझ लिया जाए जब तक वह वाक़ई अपने कुफ़्र (नास्तिकता) के विश्वास का खुला हुआ मानने वाला और ध्वज धारी न हो।

नासेबी

(अहलेबैत (अ०) से खुल्लम खल्ला दुश्मनी करने वाला)

इस में कोई शक नहीं कि वह लोग जो रसूल मुहम्मद (स०) के एहलेबैत (अ०) (घर वाले) से खुल्लम खुल्ला दुश्मनी ज़ाहिर करें वे काफ़िर हैं और नजिस ।

ये कोई आज का मसला या वक़्त के बदलने से पैदा होने वाला कोई नया हुक्म नहीं है बल्कि हमेशा से धर्म शास्त्रियों/फक़ीहों/मुज्तहिदों का मसला है और हमारे मासूमीन (अ०) के बयानों में यह बात आई है, बल्कि इस हुक्म की दलील में अहले सुन्नत की भरोसे वाली रवायतों (बयान) में भी इसके प्रमाण मिलते हैं।

पैग़म्बर (स०) की हदीस '' *या अली हुब्बुक ईमानुन व बुग्ज़ुका कुफ़्न* व निफ़ाक''
तर्जुमा - (या अली तुम से मुहब्बत ईमान है और दूश्मनी कुफ़्र। और निफ़ाक (जबान से मानना पर मन से नहीं) दूसरे फ़िरक़े के यहां ये हदीस मौजूद है ।

शीया उलमा के बयानों को देखना हो तो नीचे दी जा रही किताबों को देख सकते हैं :-

तज़्कि-र-तुल फ़ु-क़्हा अल्लामा हिल्ली भाग 1पेज 8पेज जामीउल मक़ासिद-मुहक़्क़िे सानी भाग 1पेज 16, रौज़ुल जिनान फ़ी शर्हिल अज़हान-शहीद सानी पेज 163, फ़िक़्हुल मआ़लिम शहीद सानी पजे 249, कश्फ़ुल्लसाम-फ़ाज़िल हिन्दी भाग 1, रियाज़ुल शैख हसन बिन ज़ैदुद्दीन मसायल-सैयद अली तबातबाई भाग 1, मुस्तनदुशशाया शैख़ अहमद निराक़ी भाग1 पेज 35, वसायलुशीया फ़ी अहकामिश्शरीआ सैयद मोसिन आरजी पेज 148, मिफ़्ताहुल करामह सैयद मो० जवाद अल आमिली भाग 1 पेज 144, कश्फ़ुल ग़िता-शैख़ जाफ़र नजफ़ी पेज 123, जवाहरुल कलाम शैख़ मो० हसन नजफ़ी भाग 1 पेज 451, नजातुल इबाद शैख़ मो० हसन नजफ़ी पेज 50, अलवजीज़ुर रायक़ सैयदुल उलमा सैयद हुसैन पेज 20, रौज़तुल अहकाम-सैयदुल उलमा भाग1 पेज 17, किताबुत्तहारह-शैख़ मर्तज़ा अंसारी भग 2 खण्ड 2 पेज 219, हिदायतुल अनाम-शैख़ मो० हुसैन काज़िमी भाग 2 पेज 426, मुर्शिदुल मोमिनीन मुम्ताज़ुल उलमा सैयद मुहम्मद तक़ी पेज 5, ज़रीअतुल वदाद फ़ी मुन्तखबिब नजाति इबाद- मीरज़ा मुहम्मद हुसैन पेज 35, फ़लकुन नजात सैयद महदी क़ज़वीनी पेज 21, मिनहुज़ुरिशाद शैख़ जाफ़र पेज 142, नेमुज़्ज़ाद-शैख़ मुहम्मद ताहा पेज 37, ज़ख़ीरतुल इबाद-मिरज़ा मुहम्मद तक़ी शीराज़ी पेज 19, सफ़ीनतुन्नजात- शैख़ अहमद आले काशिफ़ुल ग़िता भाग 1 पेज 102, वसीलतुन्नजात-मीरज़ा मुहम्मद हुसैन नाईनी पेज 56, उरवतुल वुसक़ा-सैयद काज़िम तबातबाई भाग 1 पेज 28।

फिर आज के ज़माने में अगर उलेमा (मुज्तहदों) से फ़तवे लिए जाएँ तो वह मिली हुई चीज़ का मांगना होगा। मगर ज़माने के हालात से कुछ लोग ऐसे फ़तवों के छपने से ग़लत फ़हमी का शिकार हो जाते हैं । ये मालूम होना चाहिए कि अहलेसुन्नत अपने मज़हब के लेहाज़ से हरिगज़ एहलेबैत (अ०) से दुश्मनी नहीं रख सकते ह० अली इब्ने अबितालिब (अ०) की फ़ज़ीलत श्रेष्ठता और महानता इनके मज़हब का एक हिस्सा है । शाह अब्दुल अज़ीज़ की किताब तोहफ़-ए-इसना अशरिया जो अहले सुन्नत में अब भी पूरी तरह मानी जाती है बल्कि मनाज़रा (धर्म विवादों) का केन्द्र है, इसमें तो ये साबित करने की कोशिश की गयी है कि अली(अ०) के असली शीया हम हैं और जितनी हदीसें ह० अली इब्ने अबितालिब (अ०) के शीयों की तारीफ़ में आयी हैं वे हम पर खपती हैं।

ऐसे में कभी ये समझना कि सुन्नी लोग नसिबी शब्द के तहत में आते होंगे, बिल्कुल ग़लत है । बेशक हां ये ज़रूर हो सकता है कि कोई सुन्नी अपने को सुन्नी कहता हो मगर अपने मज़हब के ख़िलाफ़ हज़रत अली(अ०) के लिए बुरे शब्द इस्तेमाल करता हो और उनसे दुश्मनी ज़ाहिर करता हो, तो ऐसा आदमी बेशक नासिबी होगा, और उलमा इसे नासिबी होने का फ़तवा दे सकते हैं ।

लेकिन ये बिल्कुल निजी बात है और इसका किसी गुट या सम्प्रदाय (वर्ग) से ताल्लुक़ नहीं हो सकता । जिस तरह अगर कोई शीया अपने आपको शीया कहता हो मगर नऊज़ुबिल्लाह ख़ुदा रसूल (स०) या आइम्मा (अ०) की शान में अपमान करे तो वह काफ़िर है और उसका नाम को शीया धर्म का मानना उसके लिए हरगिज़ फ़ायदे का नहीं है।

अगर आप ऐसे किसी को पहचान लें और आप के लिये साबित हो जाए कि वह इस तरह के शब्दों को अपनी ज़बान पर लाता है या क़लम से इस तरह की बातें लिखता है तो ज़रूर इसको काफ़िर समझिये और

इससे दूरी बरतिए।

याद रखिए कि जब तक इस्लाम के ज़ाहिरी परदे के अन्दर कुछ भी गुन्जाइश निकलती है तब तक मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम बराबर नहीं हो सकते और न ही ग़ैर-मुस्लिम की नजासत का हुक्म हटाया जा सकता है ।

ज़रूरत के हदें

इसमें कोई शक नहीं कि ज़रूरत की वजह से अक्सर हराम चीज़ें भी हलाल हो जाती हैं मगर ज़रूरत के मानी समझने में अक्सर लोगों को धोखा हो जाता है । ज़रूरत के आम मानी जो लोग समझते हैं उस लेहाज़ से बिना ज़रूरत खाना ही नहीं खाया जाएगा चाहे वह मुसलमान शीया इसनाअशरी के हाथ का पका हुआ क्यों न हो । फिर इसके क्या मानी कि ज़रूरत के वक़्त ग़ैर मुस्लिम का खाना जाएज़ है। देखिए ज़रूरत के ये मानी हैं कि जिस वक़्त इन्सान के लिए (बे ज़बह का) मुर्दा (लाश) जानवर हलाल हो जाता है और ज़रूरत के मानी वह वक़्त है कि जब इन्सान की ज़िन्दगी उस हराम चीज़ पर टिकी फिर ये भी याद रखिए कि ज़रूरत की वजह से जो चीज़ जाएज़ होती है, उसका इस्तेमाल बस उतना ही जाएज़ है जितनी ज़रूरत है यानी जान बचाने के लिए बस उतना ही इस्तेमाल जायज़ होगा कि जिससे बस जान बच जाए ।

अक्सर लोग ख़ास तौर से वह जो सरकारी दफ़्तरों में या कालेजों और स्कूलों में नौकरी करते हैं, वह ग़ैर मुस्लिमों से परहेज़ करने में बड़ी कठिनाई महसूस करते हैं, किसी हद तक मैं उनकी कठिनाई को मानता हूँ । अगर सब मुसलमानों का यही तरीक़ा होता कि सब ग़ैर मुसलमानों से परहेज़ करते होते तो ये इस्लाम का एक माना हुआ हुक्म समझा जाता और इसे अपने मज़हबी तासुब या तंग नज़री ना कहा जाता, जिस तरह हिन्दुओं में ये रस्म बराबर बाक़ी रही और कोई भी परेशानी पैदा नहीं हुई । मगर मुश्किल ये है कि हमारे दूसरे मुसलमान भाई इस पर नहीं चलते इसलिए न जानने वाले लोगों को इसकी मज़हबी हैसियत का एहसास नहीं होता फिर भी मैं समझता हूँ कि ये मुश्किलें हमारी कर्मशक्ति की कमज़ोरी की वजह से हैं । अगर हमारे शीया जहां जहां हो वह कड़ाई से इस पर चलते रहें और ये बताते रहें कि हम ये किसी निजी नफ़रत या दुश्मनी की वजह से नहीं करते, बल्कि एक मज़हबी उसूल की वजह से मजबूर हैं तो धीरे-धीरे ये सच्चाई फैल जाएगी और लोगों को मालूम हो जाएगा कि ये शीया फ़िरक़े (सम्प्रदाय) की एक मज़हबी विशेषता है जिससे वह मज़हबी हैसियत से बन्धें हैं।

ये बड़े ही अफ़सोस की बात है कि हिन्दुओं के लिए जेलों में इसका इन्तेज़ाम हो कि उसे हिन्दू ही के हाथ का खाना दिया जाए और ये जेल के क़ानून के ख़िलाफ न हो। सिक्खों के लिये दाढ़ी रखने की इजाज़त जेल में हो और जेल के क़ानून से मगर शीयों के लिए यह बात कि उनको मुसलमान के हाथ का खाना दिया जाए ये जेल के क़ानून के ख़िलाफ़ हो जाता है ।

याद रखिए कि ये सिर्फ़ हमारी भावना और इरादे की कमज़ोरी का नतीजा है। इतना ही नहीं बल्कि ये मामला ग़ौर करने के क़ाबिल है कि सिख तो जेल ख़ानों में दाढ़ी रखने में आज़ाद हों लेकिन मुसलमान इसके लिये आज़ाद ना हों, जबकि सिख सिर्फ़ कुछ लाख हैं और मुसलमान इस वक़्त नौ करोड़ से भी ज़्यादा हैं और दाढ़ी का रखना मुसलमानों के यहां एक मज़हबी फ़र्ज़ की हैसियत रखता है मगर ये इस बात का नतीजा है कि सिख अपनी मज़हबी शिक्षा पर चलते हैं इसलिए दुनिया उनके मज़हबी उसूल की इज़्ज़त करती है, और तमाम मुसलमान एक जुट अपनी मज़हबी तालीम (इस्लामी शिक्षा) से बन्धे टिके नहीं रहते इसलिए दूसरे इनके मज़हबी उसूलों को कोई अहमियत नहीं समझते ।

कितने ताज्जुब की बात है कि वह लोग जो ज़रा-ज़रा सी बात पर दीन में दख़ल देने का ढ़िंढोरा पीटते हैं वह इन बातों को देखते हैं और इन पर कभी ज़बान तक नहीं हिलाते। यही सूरत मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिमों के मामले की है। अगर शीया कड़ाई से मज़हबी बातों को बरतते रहें तो दूसरों को भी इसका लेहाज़ करने पर मजबूर कर सकते हैं । और अगर वह खुद ही इसकी कुछ अहमियत न समझते हों या सिरे से इसके पाबन्द ही न हों, या ऐसी कमज़ोर रस्मी पाबन्दी रखते हों कि ज़रा सी सख़्ती में घबरा जाएँ और उलेमा

से ग़ैर-मुस्लिम की चीज़ों के इस्तेमाल के जाएज़ होने का फ़तवा मंगवाने लगें तो दूसरों को भी कोई ज़रूरत नहीं है कि वह उनके इस मज़हबी हुक्म का कोई लेहाज़ करें।

ये कौन सी बात है कि दूसरी बातों पर क़ूनन से छूट जाएज़ समझा जाए और इस मज़हबी उसूल की बुनियाद रखने के लिए जेल के अन्दर क़ानून से छूट जाएज़ न हो ।

मगर इसका कोई असर तभी हो सकता है जब सब मिल कर बड़े स्केल पर यह करें वरना अगर सबने ज़रूरत की आड़ लेकर उलेमा से फ़तवे मंगवा लिए और जो भी खाने को मिला उसे मन से ना चाहते हुए ही सही आराम से से इस्तेमाल करते रहें तो अगर कुछ 'सरफिरे' अपनी बात पर टिके भी रहें तो इसका कोई नतीजा तो निकल नहीं सकता । मगर याद रखए कि अपने फ़र्ज़ को कर्तव्य समझना इन्सान का असल जौहर (सत्य) है और मज़हब के हुक्मों की अहमियत शरीर पूजा और सहलतों के ऊपर है। इलाज के सिलसिले में ख़ास तौर से सुस्ती से काम लिया जाता है, डाक्टर साहब से नुस्ख़ा लिखवाया और हिन्दू दुकान से नुस्ख़ा बंधवाया । समझा जाता है कि इस दवा का इस्तेमाल जाएज़ है, क्योंकि ज़रूरत के तहत है बाद में मुंह पाक कर लिया जाएगा । मगर ये हरगिज़ सही नहीं है । लखनऊ में तो अब अंग्रेज़ी दवाओं की भी मुसलमान बल्कि शीया दुकानें मौजूद हैं इसलिए अगर डा० साहब का एलाज भी हो तब भी कोई ज़रूरत नहीं कि हिन्दू दवाख़ाने से दवा ली जाए लेकिन अगर अंगेज़ी दवा की दुकान किसी मुसलमान की नहीं है तो आपको ये समझने की ज़रूरत है कि आप की ज़िन्दगी सिर्फ़ इसी डाक्टरी इलाज पर निर्भर है या कोई और रास्ता है यानी अगर आप हकीम के इलाज से भी ठीक हो सकते हैं और आपकी जान हकीम के इलाज से बच सकती है तो फिर आपके लिए डाक्टरी इलाज ही नाजाएज़ होगा ।

मतलब ये है कि अगर आप सचमुच शरीयत के पाबन्द हैं तो आपको इस फ़र्ज़ की अहमियत समझना चाहिए और इसमें ढ़ील से काम नहीं लेना चाहिए ।

वक़्ती (लगने वाली) नजासत

इससे पहले जिन नजासतों का नाम लिया गया, जैसे पेशाब, पाख़ाना, ख़ून, कुत्ता, सूवर, शराब, काफ़िर वग़ैरह ये सब असली और टिकाऊँ नजासतें हैं। मतलब ये है कि इनकी नजासत निजी है यानी ये अपने में नजिस हैं। ये नहीं हो सकता कि ये चीज़ें अपनी हालत पर टिके रहते हुए पाक हो जॉए । इनके अलावा दुनिया की सारी चीज़ें अपने में तो पाक हैं लेकिन अगर वह ऊपर बयान की गई चीज़ों में से किसी एक से भी भीगी हुई हालत में मिल (सट जाए या छू जाए) तो उनमें वक़्ती तौर पर नजासत आ जाएगी, इसको " मु-तनज्जिस" कहते हैं । यानी वह चीज़ जो खुद तो नजिस नहीं है मगर किसी चीज़ से मिल कर नजिस हुई है। मज़हब के क़ानून में कुछ चीज़ें ऐसी भी हैं जो किसी चीज़ के असर से नजिस ही नहीं होती और वह इन्सान के जिस्म के अन्दर वाले अंग हैं जैसे मुँह के अन्दर पेट के अन्दर, दिमाग़ के अन्दरूनी हिस्से वग़ैरह । इनके बारे में मशहूर तो ये है कि ये अन्दरूनी के हिस्से नजासत के दूर होने पर आप ही आप पाक हो जाते हैं, इसलिए अक्सर उलेमा ने नजासत के दूर होने को मुतहहरात (1) बताया है जैसे अगर दांत से ख़ून निकले तो जब तक वह ख़ून रहा है, तब तक मुंह के अन्दर का हिस्सा नजिस है, लेकिन जैसे ही ख़ून हटा वैसे ही ये अन्दर का हिस्सा पाक हो गया। इसके बाद ज़रूरत नहीं कि अन्दर से भी मुंह या हलक़ को पाक किया जाए। इसी तरह आंख और कान के अन्दर के हिस्से और दूसरे अन्दुरूनी हिस्से । लेकिन जहां तक इस मसले पर ग़ौर किया जाता है तो पता चलता है कि असली नजासत वही ख़ून वग़ैरह की नजासत है जो उसकी अपनी नजासत है, इसलिये जब तक वह बाक़ी है तबतक नजासत का हुक्म मौजूद है और जैसे ही नजासत दूर हुई वैसे ही नजिस होने का हुक्म ख़त्म हो गया । इसलिये ये कहना चाहिए कि जिस्म के अन्दर के हिस्से नजिस ही नहीं होते, न यह कि नजिस तो हो जाते हैं मगर नजासत के दूर होते ही पाक हो जाते हैं

बिल्कुल यही सूरत जानवरों के जिस्म की है हो सकता है कि इनके जिस्म पर कोई नजासत लग जाए तो जब तक वह नजासत खुद मौजूद है तब तक उसका हुक्म मौजूद रहेगा, लेकिन जैसे ही वह नजासत दूर हुई

वैसे ही उसका हुक्म भी हट जाएगा। मिसाल के लिए आपके सामने किसी चिड़िया की चोच या पन्जे में कोई नजासत लग जाए तो जब तक उसकी चोच या पन्जे में नजासत लगी है तब तक वह चोंच या पन्जे नजिस हैं और जैसे ही नजासत हटा दी गई वैसे ही वह पाक हो गए । इसे भी मेरे नज़दीक ये नहीं कहना चाहिए कि वह नजिस थे पाक हो जाते हैं बल्कि ये कहना चाहिए कि वह नजिस होते ही नहीं ।

ग़ौर कीजिए तो ऊपर ब्यान किया गया शरीयत का हुक्म बिल्कुल इन्सान की प्रकृति से मेल खास है । जैसा कि पीछे बताया गया है कि पेशाब, पाख़ाना वग़ैरह की नजासत ज़्यादातर ज़ाती गन्दगी और तबियत में एक तरह की घिन के लेहाज़ से है और ये एक खुली हुई सच्चाई है कि इन सब चीज़ों (पेशाब, पाख़ाना, वग़ैरह) से पूरी तरह तबियत में घिन तभी पैदा होती है जब यह बाहरी हिस्सों में पाई जाती हों । जब तक ये अन्दर छिपी होती हैं तब तक इन्सान इसके नजिस होने के बारे में सोचता भी नहीं तभी तो उस हालत में जब इन्सान को इसका एहसास हो यानी पेशाब या पाख़ाना लगा हो तब भी वह हर पाक से पाक जगह पर चला जाता है । अब न उसे खुद ख़्याल होता है और न ही कोई दूसरा ये सोचता है कि वह किसी नजासत को उस पाक जगह पर ले गया है । हलांकि अगर इन्हीं में से कोइ चीज़ ज़रा सी भी उसके जिस्म के किसी बाहरी हिस्से में लगी होती तो वह खुद उस जगह पर न जाता और न ही कोई दूसरा उसका वहां जाना पसन्द करता है ।

इससे पता चलता है कि बाहर और अन्दर के लेहाज़ से इन्सान के जिस्म की दो दुनियाएँ अलग अलग हैं और इस अन्दर वाली दुनिया ही को इन्सान अपने से अलग समझता है ।

मिसाल के लिए ये भी देखिए कि इन्सान के मुँह की लार से तबियत में उतनी घिन नहीं पैदा होती है कि शरीयत की ओर से उसे नजिस ठहरा दिया जाता फिर भी किसी हद तक इसमें ये बात ज़रूर है इसलिए ख़बासत (मैल) के तहत इसका इस्तेमाल यक़ीनन हराम है मगर ये उसी वक़्त है कि जब मुँह से बाहर आ जाए, उस हालत में ये ' थूक ' कहलाता है और उस वक़्त उसकी गिरावट का पूछना ही क्या। लेकिन यही जब मुँह के अन्दर हो तो उसे लार कहा जाता है और उस हालत में क़ुर्आन के पन्नों को पलटते वक़्त ये क़ुर्आन के पन्नों तक भी पहुँच जाए तो लगाव वालों को कोई एतराज़ नहीं।

लाल, सफ़ेद, तरोताज़ा और खिले हुए चेहरे के रंग से खून का रंग फूटता नज़र आता है और गुस्से की हालत में तमतमाता हुआ चेहरा खून के बहाव का साफ़-साफ़ पता देता है मगर जब तक बहुत पतली ही खाल का पर्दा क्यों न मौजूद है तब तक इन्सान का मन इसके नजिस होने के बारे में सोच भी नहीं सकता, लेकिन यही अगर छलक जाए और बाहर निकल आए तो चेहरे को किसी चीज़ से पोंछना ज़रूरी है ।

मेडिकल साइंस के लेहाज़ से देखिए तब भी ये पता चलता है कि ये गन्दी चीज़ें जब बाहर रहें तो आस-पास की हवा में तरह-तरह की बीमारियों के जरासीम पैदा होते हैं और लोगों की सेहत के लिए नुक़सानदेह होते हैं। दूसरी चीज़ों की क्या बात सिर्फ़ थूक ही के लिए आप स्टेशनों पर टेनों मे, इमारतों में ये लिखा हुआ देखेंगे कि "थूकना मना है" मगर हर इन्सान जो इन जगहों पर आता-जाता, रहता-सहता है, उसके मुँह में हर वक्त ये (थूक) रहती है, उसमें कुछ भी नहीं है।

नेचुरली यह बिल्कुल सामने की बात है कि ये चीज़ें जब बाहर हों तो इनमें बदबू पैदा होकर हवा में दूर तक फैल जाएगी और इसका बुरा असर महसूस होगा और बुरा लगेगा, लेकिन अन्दर होने की हालत में ऐसा नहीं होता । मालूम होता है कि शरीयत की तरफ़ से ज़ाहिर बाहर और अन्दर का जो फ़र्क़ रखा गया है वह बिल्कुल नेचर के क़ानून से मेल खाता है ।

जानवरों के जिस्म के अंगों की पाकी से इन्सानों के लिए आसानी पैदा हो गई, क्योंकि जानवरों पर खुद तो कोई ज़िम्मेदारी लागू नहीं होती और न उनपर कोई पाबन्दी डाली जा सकती है। उनके हाथ-पांव, मुँह, चोंच, पन्जों के नजिस होने का अगर मतलब हो सकता है तो सिर्फ़ ये कि इन्सान उनसे परहेज़ करे। अगर पानी का घड़ा रखा है और इसमें कौवा चोच डाल दे तो ये घड़ा नजिस समझा जाता, कपड़ा धोकर तार पर फैलाया,

चिड़िया आकर बैठ गई तो कपड़ा नजिस हो जाता क्योंकि कौवे की चोंच और चिड़िया के पन्जे आपके क़ाबू में नहीं हैं जो आप उनको नजिस जगह जाने से रोकते फिरें । ऐसे में उन पर तो कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता मगर आपकी ज़िन्दगी अजीरन हो जाती । लेकिन शरीयत का ये हुक्म होने यानी उनकी नजासत उसी वक़्त तक है जबकि उनके जिस्म पर नजासत लगी है । जैसे ही नजासत दूर हुई वह पाक हैं, इससे बड़ी आसानी पैदा हो गयी । अब अगर देख लिया कि उसकी चोच, पन्जे हाथ या मुॅह में कोई नजासत लगी हुई है तब तो बेशक आपको उसे नजिस समझना पड़ेगा । ये उस जानवर के जिस्म की नजासत नहीं होगी बल्कि उस असली नजासत का नतीजा होगा जो उसमें लगी हुई है लेकिन अगर कोई नजासत लगी हुई नजर नहीं आती तो कोई वजह नहीं कि आप उसको नजिस समझें । (यानी अब आप उसे नजिस न समझें)। ....जारी ✦✦✦

नाते रसूल

नदल हिन्दी

दयारे करम है दयारे मोहम्मद
है रश्के जिनां खुद जवारे मोहम्मद
जिसे कहते हैं रौनक़े बाग़े आलम
समझ लो यही है बहारे मोहम्मद
खुदा की खुदाई है मोहताज इनकी
ये है कम से कम इख़्तियारे मोहम्मद
कहा रजअते शम्सो शक़्क़े क़मर नें
जहां में है बस इक़्तेदारे मोहम्मद
बलन्दी-ए-किरदार की हद नहीं है
है काफ़िर को भी ऐतेबारे मोहम्मद
मलाएक निगाहें बिछाए हुए हैं
है मेराज में इन्तेज़ारे मोहम्मद
उठी गर्दे पा और पंहुची फ़लक पर
बलन्द आस्तां है ग़ुबारे मोहम्मद
सवारी बना है रसूलों का आक़ा
हैं दोनों नवासे सवारे मोहम्मद
मुसीबत में जो काम आया नबी के
उसी को कहुंगी मैं यारे मोहम्मद
है सीने में जिसके उलूमे पयम्बर
उसी को कहो राज़दारे मोहम्मद
जिसे देखकर उठ खड़े हों पयम्बर
वही है यक़ीनन वक़ारे मोहम्मद
मेहारे ज़माना है दस्ते नबी में
है हाथों में किसके मेहारे मोहम्मद
वो ताजे वेलायत नबी ने पिन्हाया
वो मौला बना ताजदारे मोहम्मद
पयम्बर लिए हैं जिन्हें ज़ेरे चादर
वही हैं वही इफ़्तेख़ारे मोहम्मद
वसीये नबी जो मिनल्लाह होगा
करेगा वही शख़्स कारे मोहम्मद
नबी अपने हैं ज़िम्मादारे ख़ुदाई
ख़ुदा अपना है ज़िम्मादारे मोहम्मद
अलीये वली और हसनैने आली
यही चन्द तन हैं क़रारे मोहम्मद
जिसे कहते हैं फ़ातेमा बिन्ते अहमद
वो है नाज़िशो इफ़्तेख़ारे मोहम्मद
जिसे देखकर गुल को आये पसीना
वो है गेसुए मिश्क़ बारे मोहम्मद
पसे गर्दे हिज़्बे पयम्बर नदा चल
जिनां जा रहा है ग़ोबारे मोहम्मद

✦✦✦

मदहे इमाम जाफरे सादिक़ अ. स.

वसीये मुरसले आज़म हैं हज़रत जाफ़रे सादिक़
तभी तो करते हैं कारे रिसालत जाफ़रे सादिक़
है वाजिब आपकी लारैब मिदहत जाफ़रे सादिक़
मगन है चूंकि दरियाए तबीअत जाफरे सादिक़
इन्हें हाजत नहीं दुनिया की, बस अल्लाह काफ़ी है
मगर है सारे आलम की ज़रूरत जाफ़रे सादिक़
न क्यों तालीम दें इल्मे पयम्बर की ज़माने को
हैं बेशक वारिसे इल्मे नुबूवत जाफ़रे सादिक़
ज़माना इस क़दर रौशन तुम्हारे इल्म ही से है
तुम्हीं हो फख़्रे अरबाबे बसीरत जाफरे सादिक़

✦✦✦

आवागवन

लेखक : सय्यद मुस्तफ़ा हसन रिज़वी साहब सम्पादक साप्ताहिक "सरफराज़", लखनऊ
अनुवादक : तनवीर जहाँ रिज़वी साहिबा

इस्लामी धर्म के अनुसार दुनिया अमिट नहीं है बल्कि मिट जाने वाली है। इसका आदि भी है और अन्त भी। यह सदैव रहने वाली नहीं है अपितु एक दिन इसका भी अन्त होगा। यह परीक्षालय समान है और यहां के अच्छे तथा बुरे कामों का फल मृत्यु के पश्चात् मिलेगा।

परन्तु आर्य धर्म के अनुसार दुनिया हमेशा से है ओर हमेशा रहेगी, न इसका आदि है और न अन्त। इस धर्म के अनुसार जिस प्रकार ईश्वर सदैव रहने वाला है उसी प्रकार आत्मा और पदार्थ भी सदैव बाकी रहेगा। जिस प्रकार से एक कुम्हार मिट्टी से अनेक प्रकार के बर्तनों का निर्माण करता है उसी प्रकार से ईश्वर ने आत्मा और पदार्थ से अनेक प्रकार की चल और अचल वस्तुओं की सृष्टि की। जिस प्रकार से रसयन शास्त्र का जानने वाला अनेक प्रकार के रसायनिक पदार्थो की सहायता से एक नया पदार्थ उत्पन्न करता है उसी प्रकार से ईश्वर ने भी आत्मा और पदार्थ के सन्तुलन से अनेक प्रकार की वस्तुओं की रचना की। परन्तु ईश्वर ने स्वंय आत्मा और पदार्थ को नहीं बनाया।

इस सिद्धान्त का फल यह निकला कि उन्हें कर्म और फल के सम्बनध में एक बुद्धि में न आने वाला सिद्धान्त निर्धारित करना पड़ा जिसे आवागवन कहते हैं।

आवागवन का तात्पर्य यह है कि मनुष्य जैसे कर्म अपने जीवन में करता हैं उसी के अनुसार उसका पुनर्जन्म होता है। यह सिद्धान्त केवल मनुष्य पर ही लागू नहीं होता अपितु जानवरों, भौतिक पदार्थों पेड़ पौधों इत्यादि पर भी लागू हाता है। मृत्यु के पश्चात साधु के हत्यारे को ईश्वर गाय की शक्ल में पुनर्जन्म देगा। इसी प्रकार किसी के अच्छे कर्मो के फलस्वरूप अगले जन्म में उसे राजा बनाया जाएगा और किसी को भिखारी। इस प्रकार से अच्छे तथा बुरे कर्मों के अनुसार पुनर्जन्म का चक्कर चलता रहता है जिसे आवागवन कहते हैं।

आर्यो की प्रारम्भिक गलती यह थी कि उन्होंने दुनिया को अमिट माना तथा ईश्वर की तरह आत्मा व पदार्थ को भी हमेशा से है और हमेशा रहेगा समझने लगे। और आवागवन के सिद्धान्त को सही मानने लगे।

इस प्रकार इस्लामी धर्म और आर्य धर्म एक दूसरे से भिन्न हैं।

आर्यों के अनुसार ईश्वर एक है। परन्तु उसने आत्मा तथा पदार्थ की रचना नहीं की। इस प्रकार, पदार्थ, आत्मा और ईश्वर तीनों एक ही कोटि में आ गए। यदि यह माना जाए कि यह तीनों वस्तुऐं हमेशा से हैं तो प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि इनमें से किसे आत्मा तथा किसे आत्मा माना जाए। इन तीनों को एक दूसरे से भिन्न करने का कोई मापदण्ड आर्यों के पास नहीं है। यदि यह माना जाए कि जो ईश्वर में शक्ति तथा क्षमता है वह आत्मा और पदार्थ में नही। तथा जो पदार्थ में है वह आत्मा तथा ईश्वर में नही। तब इन तीनों में से कोई भी अपने स्थान पर पूर्ण नहीं हुआ और जो अपूर्ण है वह सदैव बाक़ी रहने वाला नहीं। एक समय वह आएगा जब वह समाप्त हो जाएगा।

इस सिद्धान्त पर आधारित जितने भी सिद्धान्त बनाए जाएंगे वह सब गलत होंगे। यही कारण है कि प्रलय के सम्बन्ध में भी आर्यों का सिद्धान्त ऐसा ही है जैसा, ईश्वर, आत्मा तथा पदार्थ का सिद्धान्त।

जब आर्यों ने देखा कि कोई राजा है, कोई भिखारी, कोई निर्धन है तथा कोई अमीर, कोई रोगी है तो किसी का स्वास्थ एंव अच्छा है तो इसका उन्होंने यह तात्पर्य निकाला कि यह उनके कामों का फल है। उनकी बुद्धि में यह धारणा न आई कि ईश्वर जिसे वह कृपालु तथा दयालु कहते हैं उसने ऐसा क्यों किया? यदि यह

मान लिया जाए कि ईश्वर ने ही किसी को इतना धन दिया जिससे वह विलासिता की वस्तुओं को प्रयोग में ला सके और किसी को इनता जीवित रखने के लिए रोटी को भी प्रयोग न कर सके तो यह मानना पड़ेगा कि ईश्वर बड़ा निर्दयी है। इस कारण आर्यों ने यह समझ लिया कि यह सब मनुष्य के स्वंय कर्मों का फल है जो इस जन्म में मिल रहा है।

परन्तु यह मान लेना कि यह सब कर्मों का फल है उचित नहीं है। इसके कुछ और कारण है जो आर्यो की बुद्धि से परे है।

उदाहरण के लिए किसी मनुष्य के व्यय से उसकी आय बहुत अधिक है। बिना यह मालूम किये कि वह किस मद में अपनी आय व्यय करता है, यह सोचना उचित नही है कि उसने विलासता की वस्तुओं का प्रयोग किया है। सम्भव है कि वह मनुष्य विलासता की वस्तुओं को प्रयोग न करके निर्धनों तथा अनाथों की सहायता करता हो। और इसी कारण वह स्वंय भोग रहा हो। बस इसी प्रकार आर्यों ने बिना पता लगाए यह समझ लिया कि यह सब मनुष्य के कर्मों का फल है।

यह सत्य है कि यह दुनिया परीक्षालय समान है और ईश्वर के प्रत्येक नियम को समझ लेना सरल नहीं है। चाहे मनुष्य कितनी उन्नति क्यों न कर ले। ईश्वर ने अन्धकार को इस लिए उत्पन्न किया ताकि मनुष्य प्रकाश के महत्व को समझ सके। भयंकर बीमारियों को बनाया ताकि स्वास्थ के महत्व को समझाा जा सके। कष्ट भोगने के पश्चात ही आराम के महत्व को समझा जा सकता है। स्वास्थ खो जाने के पश्चात ही उसके महत्व को स्वीकार किया जा सकता है। जैसा कि ऊपर बताया गया कि दुनिया परीक्षालय समान है तथा मनुष्य परीक्षार्थी के समान है। परीक्षालय रूपी दुनिया में ईश्वर ने भिन्न भिन्न प्रकार से मनुष्य रूपी परीक्षार्थियों की परीक्षा ली। कुछ को निर्धन बनाया ताकि उनकी सामर्थ्य तथा कुशलता की परीक्षा ली जासके। और इसका पता लगाया जा सके कि भूख का कष्ट सहकर भी वह बुराई के पथ पर अग्रसर तो नहीं होता। कुछ मनुष्य को आंखों के प्रकाश से वंचित करके यह चेष्टा की, जिनकी आंखों में ज्योति है वह उनकी सहायता करते हैं अथवा नहीं। इस प्रकार ईश्वर मनुष्य की परीक्षा लेता है। इस से हम इस निष्कर्ष पर पंहुचते हैं कि आर्यों का यह सिद्धान्त कि सब मनुष्यों के कर्मों का फल है जो उन्हें इस जन्म में भोगना पड़ रहा है गलत है। परन्तु यदि इस नियम को मान लिया जाए तो यह भी मानना पड़ेगा कि उनका ईश्वर निर्दयी है। परन्तु आर्यों के अनुसार वह दयालु तथा कृपालु है। जो कुछ भी मनुष्य को दिया गया है वह ईश्वर का दान है मजदूरी नहीं। दान तथा मजदूरी में भिन्नता है। उदाहरण के लिए यदि हम मकान बनाने के लिए श्रमिकों की सहायता लें! उनके श्रम के बदले में हम उन्हें उनकी मजदूरी दें तो वह उसके पाने का अधिकारी है। यदि हम उसे उसके श्रम के बदले में कम मज़दूरी देंगे तो यह गलत होगा। परन्तु दान इससे भिन्न है। उदाहरण के लिए यदि हमारे द्वार पर दस भिखारी आए और हम किसी को अधिक भिक्षा दें किसी को कम तो किसी भिखारी को उसके सम्बन्ध में कुछ कहने का अधिकार नहीं है। हम निर्दयी भी नहीं कहे जा सकते क्योंकि जो कुछ उन्हें प्रदान किया गया वह किसी कार्य के बदले में नहीं प्रदान किया गया अपितु यह हमारा दान था। जिनता चाहा उनता दान दिया। इसीप्रकार कोई जो कुछ किसी को प्रदान करता है वह उसका दान है उसकी दया है। किसी को इसका अधिकार नहीं कि उससे शिकायत करे और न ही इस कारण से वह निर्दयी ठहरता है। यदि माली किसी पौधे को पानी से सींचे और किसी को सूखा रखे तो यह नहीं कहा जा सकता कि उसने निर्दयता से काम लिया।

ईश्वर बुद्धिमान तथा सर्वशक्तिमान है। उसने जो परस्पर भिन्नता उत्पन्न की है उसका कोई न कोई कारण अवश्य है। हो सकता है कि ईश्वर ने हमें इस कारण कष्ट में रखा हो ताकि हम उससे अधिक कष्ट भोगने से बच सकें। इसका पता मुझे तब चला जब एक बार 1930–31 में लखनऊ में एक प्रसिद्ध डाकू के भय से लोग रात्रि में ठीक प्रकार से सो नही पाते थे धनवान को जरा सी आहट पर यह संदेह होने लगता था कि डाकू आ गए। परन्तु मैं रात को आराम से सोता था और बहुत प्रसन्न था कि ईश्वर ने मुझे धन से वंचित रखा। फिर मैं ईश्वर से क्यों शिकायत करूं।

इन समस्त कारणों का जिनके आधार पर ईश्वर ने परस्पर भिन्नता रखी समझना सरल नहीं है। परन्तु फिर भी मोटी मोटी बातें हमारी बुद्धि में आ जाती हैं। ऐसे अनेक उदाहरण दृष्टि के समक्ष हैं। हम देखते हैं कि जब किसी मनुष्य के पास धन-सम्पत्ति होती है तो वह बुराई के पथ पर चलने लगता है। और जब धन समाप्त होता है तो समस्त अच्छाइयाँ उसमें आ जाती हैं। उदाहरण के लिए अमवी वंश का बादशह अब्दुल मलिक जिसके समय में हिन्दुस्तान में सिन्ध के सूबे पर आक्रमण हुआ था, बादशाह बनने से पूर्व बड़ा ही अच्छा मनुष्य तथा ब्रम्हाचारी हुआ था। परन्तु जब बादशाह हुआ तो ऐसे ऐसे बुरे कर्म किए और प्रजा पर ऐसे अत्याचार किए जिसके विचार मात्र ही से शरीर में थरथरी उत्पन्न हो जाए। इससे इस निष्कर्ष पर पंहुचा जा सकता है कि जब ईश्वर किसी को धन सम्पत्ति से या किसी वस्तु से वंचित रखे तो यह भी उसकी कृपा है। जिसे हम समझ नहीं पाते। हो सकता है ईश्वर ने दुर्बलों को इसलिए शक्ति नहीं दीहो ताकि शक्ति के घमण्ड में वह किसी से दुर्व्यवहार तथा युद्ध न करें।

प्राकृति का नियम है कि जो भी मनुष्य किसी कार्य को जी लगाकर करेगा तो सफलता अवश्य उसके पग चूमेगी। उदाहरण के लिए दो किसान हैं, एक ठीक समय पर खेत जोतता और बोता हैं, आवश्यकतानुसार सिंचाई के साधनों को जुटाता है। ठीक समय पर फसल काटता है, तो उसके परिश्रम का फल उसे अधिक अनाज के रूप में मिलेगा। अनाज के अधिक अत्पन्न होने से धीरे धीरे किसान की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परन्तु जो किसान अकर्मठ तथा परिश्रमशील नहीं है, और न भूमि की उपजाऊ शक्ति में वृध्दि करने का प्रयास करता है, न ठीक समय पर बीज डालता है तो उसकी उपज भी उच्छी नहीं रहेगी। और उसकी आर्थिक स्थिति पहले से भी बुरी हो जाएगी। दोनों स्वयं ही अपनी आर्थिक स्थिति को बनाने या बिगाड़ने वाले हैं। इसको उनके पिछले जन्म के कर्मों का फल नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार शराबी अपने स्वास्थ को स्वंय नष्ट करता है। एक चोर अपने बुरे कर्मों के कारण जेल जाता है, न कि पिछले जन्म में किए कर्मों के कारण।

यदि इन सब बातों को पिछले जन्म के कर्मों का फल समझा जाए तो इसको क्या उत्तर होगा कि प्रारम्भ में जब आत्माओं को अच्छे या बुरे कार्य करने का अवसर नही प्राप्त हुआ था तो ईश्वर ने किसी को मनुष्य, किसी को जानवर, किसी को पेड़ पौधे किसी को चन्द्रमा सूर्य तथा तारा क्यो बनाया ? इसका तात्पर्य यही है कि आवागवन का सिद्धान्त ही गलत है।

आर्यों के अनुसार केवल उनका धर्म ही सत्य है और वही लोग सत्य के मार्ग पर अग्रसर हैं। उनके धर्म के अतिरिक्त समस्त धर्म चाहे वह ईसाई हों अथवा मुसलमान गलत रास्ते पर है।

हम देखते हैं कि पूरब तथा पश्चिम में बसने वाले मुसलमान धन, सम्पत्ति, स्वास्थ्य, शक्ति इत्यादि में हिन्दुओं से आगे हैं। हिन्दुओं के आवागवन के सिद्धान्त के अनुसार यह निष्कर्ष निकलता है कि उन्होंने पिछले जन्म में अच्छे कार्य किए होंगे। अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि फिर परमेश्वर ने उन्हें हिन्दु के बजाए मुसलमान क्यों बनाया ? यदि उन्होंने अच्छे कार्य किए थे तो उन्हें गलत रास्ते पर चलने वाली जाति में पैदा नहीं करना चाहिए था, अपितु किसी आर्य परिवार में उन्हें जन्म देना चाहिए था।

पेड़ पौधों तथा धातुओं में भी आवागवन के सिद्धान्त के अनुसार आत्म निवास करती है। यदि ऐसा है तो आर्य लोग पत्थरों को काट कर तथा तोड़कर मकान का निर्माण क्यों करते हैं ? पेड़ों की लकड़ी ईंधन के लिए क्यों प्रयोग मे ंलाते हैं, तरकारियों और लकड़ी का क्यों प्रयोग करते हैं? एक ओर तो वह मानते है कि जीव हत्या नहीं करना चाहिए। दूसरी ओर यह भी मानते हैं कि पेड. पौधों तथा पत्थरों व धातुओं में भी आत्मा निवास करती है फिर उनका प्रयोग भी करते है। इन सब वस्तुओं को उन्हें जब ही प्रयोग मे ंलाना चाहिए जब वह आवागवन के सिद्धान्त को गलत समझें।

आर्यों ने इस सिद्धान्त के अपवादों की ओर कभी ध्यान नहीं दिया। यदि इस सिद्धान्त की सत्यता स्वीकार कर ली जाए तो डाक्टरों तथा वैद्य की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। क्योंकि यदि किसी को कोई रोग है तो पिछले जन्म के कर्मों के फलस्वरूप है। वह

जब ही समाप्त होगा जब उसके दण्ड का समय पूर्ण होगा। ईश्वर ने समस्त वस्तुओं का निर्माण मनुष्य के प्रयोग करने के लिए किया है, ताकि आवश्यकतानुसार वह उसको अपने काम में ला सके। जानवर इसलिए बनाए ताकि वह मनुष्य की खेती, सवारी, दूध मक्खन इत्यादि की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें। पेड़ पौधे इसलिए बनाए ताकि मनुष्य अपने जीवन निर्वाह के लिए अनाज इत्यादि प्राप्त कर सके। यदि ईश्वर ने धातुओं तथा पत्थरों का निर्माण न किया होता तो मनुष्य को पहनने मे लिए आभूषण, रहने के मकान तथा खाने के लिए बर्तन कहां से प्राप्त होते?

सृष्टि की उत्पत्ति के समय जब कुछ स्त्रियों तथा पुरूषों के अतिरिक्त ईश्वर ने कुछ नहीं बनाया था, उस समय मनुष्य किस प्रकार अपना जीवन निर्वाह करता था?

आर्यों के आवागवन के सिद्धान्त का एक अपवाद यह भी है कि इससे इनका ईश्वर कृपालु नहीं सिद्ध होता। और न वह हमसे यह आशा करता है कि दीन दुखियों के साथ अच्छा व्यवहार करें इसलिए कि हमें जो कुछ भी प्राप्त हुआ है वह पिछले जन्म के कर्मों का फल है। ईश्वर की कृपा मात्र नहीं। वह ईश्वर का दान नहीं है अपितु हमारे अच्छे कर्मों का फल हैं। इस प्रकार आर्यों का ईश्वर न दयालु सिद्ध होता है और न कृपालु।

इस सिद्धान्त से यह भी सिद्ध होता है कि जो लोग किसी प्रकार का कष्ट उठा रहे हैं, उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करना चाहिए। क्योंकि उनके बुरे कर्मों के फलस्वरूप उन्हें दंड दिया जा रहा है। यदि हम उनके साथ अच्छा व्यवहार करेंगे तो यह पाप होगा और हम भी दंड पाने के अधिक करीब न जाएंगे। जिस प्रकार यदि राजा किसी को दंड दे तो प्रजा का कोई अधिकार नहीं है कि वह उसकी किसी प्रकार से सहायता करें। इस प्रकार इस सिद्धान्त को सही मानने की दशा में किसी प्रकार का दान एक व्यर्थ वस्तु बन जाता है। और अनाथालय आश्रम एवं जनहित के लिए खोले गए औषधालय स्थापित करने की कोइ आवश्यकता नहीं रह जाती है।

आवागवन के सिद्धान्त को यदि उचित माना जाए तो यह भी मानना पड़ेगा कि यह सभी कारखाने पाप के ऊपर ही निर्भर है। यदि समस्त मनुष्य अच्छे बन जाऐं तो फिर चन्द्रमा, सूर्य पेड़ पौधे, पत्थर, धातु कोई भी वस्तु शेष नहीं रहेगी। कयोंकि जब मनुष्य पाप करता है तो मृत्यु के पश्चात उसकी आत्मा को पेड़ पौधे पत्थर धातु पशु इन्यादि के रूप में दुबारा प्रथ्वी पर जन्म दिया जाता है। इससे यह सद्ध होता है कि ईश्वर की यह इच्छा है कि पृथ्वी पर पाप होते रहें। ताकि यह क्रम यूँ ही चलता रहे और वह अनेकों प्रकार की वस्तुओं का निर्माण करता रहे इसी प्रकार मनुष्यों की भी यह इच्छा होगी कि बुराइयों का कभी अन्त न हो। बल्कि उनमें बराबर वृद्धि होती रहे। इसलिए कि यदि पाप न होंगे तो ईश्वर अच्छे लोगों को क्या पुरस्कार देगा। उदाहरण के लिए किसी राम चरण नाम के पुरूष ने पिछले जन्म में एक ऐसा अच्छा कार्य किया था जिसके फलस्वरूप उसे इस जीवन में एक गाय मिलनी चाहिए थी। और ईश्वर ने साधु के हत्यारे की यह सजा रखी है कि अगले जन्म में उसे गाय का रूप दिया जाएगा। अब यदि पृथ्वी पर कोई मनुष्य साधु की हत्या नहीं करेगा तो गाय का निर्माण कैसे होंगा? और राम चरण को उसके अच्छे कर्म का फल कैसे मिलेगा? इसलिए रामचरन की यह इच्छा होनी चाहिए कि कोई मनुष्य साधु की हत्या करे ताकि उसे गाय की प्राप्ति हो सके। इसी प्रकार ईश्वर भी इसके लिए बाध्य है कि किसी मनुष्य के द्वारा साधु की हत्या करवाए ताकि रामचरन या उसी के ऐसे मनुष्यों को उनकी अच्छाइयों के बदले में गााय दे सके।

ऐसा नहीं है कि किसी प्रकार के कष्ट या पीड़ा का कारण पिछले जन्म के फल हों अपितु कभी कभी किसी अच्छे कार्य को करने के लिए भी कष्ट भोगना पड़ता है। किसी मनुष्य को आग से बचाने के लिए स्वंय भी अग्नि में जलना पड़ेगा। इसीप्रकार आवश्यकतानुसार भोजन न होने पर किसी भूखे को भोजन कराने पर स्वयं भूखे रहने का कष्ट सहन करना पड़ेगा। इसका यह तात्पर्य नहीं है कि पिछले जन्म के कर्मों के फलस्वरूप भूख का कष्ट भोगना पड़ा।

पृथ्वी पर सहस्त्रों श्रषियों मुनियों ने जन्म

लिया। उनको ईश्वर ने इसीलिए पृथ्वी पर भेजा ताकि वह लोगों को अच्छे पथ पर अग्रसर करने की चेष्टा करें। उन्होंने इस मार्ग में बड़ी कठिनाइयों का सामना किया। क्या उनके सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि यह उनके पिछले जन्म का फल है? आर्यों को स्वयं अपने ऋषियों, मुनियों के जीवन पर दृष्टि डालना चाहिए और फिर न्याय की दृष्टि से यह विचार करना चाहिए कि आवागवन का सिद्धान्त ठीक हैं अथवा नहीं? रामचन्द्र जी को जिनको वह लोग ईश्वर का अवतार मानते हैं बनवास का कष्ट सहन करना पड़ा।

रावण द्वारा सताए गये यदि आवागवन के सिद्धान्त को सही मान लिया जाए तो क्या हिन्दु लोग इसे स्वीकार कर लेंगे कि रामचन्द्र जी को जितनी कठिनाइयाँ उठाना पड़ी वह सब उनके कर्मों के फलस्वरूप थी? इसी प्रकार भगवान कृष्ण को जो महाभारत के युद्ध में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा क्या वह उनके पापों का परिणाम थी? अच्छे कार्य की पूर्ति में तो कठिनाइयों से गुज़रना ही पड़ता है। तीर्थ स्थान की यात्रा को यदि कोई जाएगा तो उसे कष्ट भोगना ही पड़ेगा। इसी प्रकार तपस्या करने में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। गौतम बुद्ध ने तपस्या करने में कितनी कठिनाइयां उठाईं। इसका तात्पर्य यह तो नहीं है कि धर्म का पालन करने में जो मनुष्य कष्ट भोगता है वह भी उसके पिछले जत्म के बुरे कर्मों का फल है। क्या आर्य यह बात स्वीकार करेंगे कि तपस्या करने में जो गौतम बुद्ध ने कष्ट झेले वह उनके बुरे कर्मों के फल थे?

आवागवन के सिद्धान्त की सत्यता स्वीकार करने वालों के लिए धार्मिक पाठ तथा पूजा इत्यादि की कोई आवश्यकता नहीं रहती। जब दुख तथा सुख अपने ही कर्मों का फल हैं तो तपस्या इत्यादि की भी कोई आवश्यकता नहीं रहती ।

यदि पिछले जन्म में अच्छा कार्य किया है तो स्वयं हमे उसका फल मिल जाएगा। आवागवन के सिद्धान्त के मानने वालों के ईश्वर में इतनी सामर्थ्य नहीं कि वह दया करके बिना मांगे हमें कुछ दान करें। क्योंकि वह दयालु नहीं है और न अपनी ओर से हमें कुछ दे सकता है। इस सिद्धान्त से यह भी सिद्ध होता है कि ईश्वर क्षमा करना नहीं जानता। छोटे से छोटे पाप की भी वह दंड देगा। परन्तु बुद्धि बताती है कि सच्चे हृदय से यदि क्षमा मांगी जाए और आगे पाप न करने की सौगन्ध खाई जाए तो पाप क्षमा कर दिए जाते हैं। परन्तु यदि कोई राजा अपनी प्रजा पर दया नहीं करता उनके क्षमा मांगने पर भी उनको माफ नहीं करता तो वह स्वयं भी प्रजा का प्रेमी नहीं बन सकता। यही हाल इस सिद्धान्त के मानने वालों के ईश्वर का है। जो किसी मनुष्य के ऐसे अपराध को भी माफ नहीं करता जो भूले से ही हो गया हो।

हम देखते हैं कि जब कोई अपराधी आपराध करता है, पुलिस उसे दंड दिलवाना चाहती है। जब उसे पूर्ण रूप से यह विश्वास हो जाता है कि कानून के हाथ से न बच सकुंगा और क्षमा न मिल पाएगी तो वह भाग निकलता है। इसी प्रकार इस सिद्धान्त के मानने वालों से यदि कोई पाप हो जाए तो उसे यह विश्वास करने का अधिकार है कि दंड अवश्य मिलेगा। माफ़ी नहीं मिल सकती तो वह सोचेगा कि जब क्षमा नहीं मिल सकती तो और अपराध क्यों न करें। इस प्रकार वह पुर्ण रूप से अपराधी बन जाएगा।

आर्यों में आत्मा को अमिट और स्वतंत्र माना गया है। ऐसी स्थिति में हो सकता है कुछ आत्माए एक शरीर को त्याग कर दूसरे में प्रवेश कर लें। इस सिद्धान्त के अनुसार आत्मा को बुद्धिमान भी माना गया है। यदि आत्मा में बुद्धि है तो यह भी आवश्यक है कि उसे पिछले जन्म की सब बातें स्मरण रहें परन्तु पेड़ पौधों का क्या प्रश्न कोई मनुष्य भी यह नहीं बता सकता कि उसने पिछले जन्म में कौन से अच्छे या बुरे कार्य किए। बुद्धिमान और स्वतंत्र आत्मा की वह विशेषताएं जो मनुष्यों में दिखाई पड़ती हैं पेड़ पौधों में क्यों दृष्टिगोचर नहीं होतीं? यदि उनमें भी वही आत्मा निवास करती है। परन्तु आर्यों के पास इसका कोई उत्तर नहीं है।

जब पेड़ पौधों, पत्थरों तथा मनुष्यों में आत्माएं पाप तथा पुण्य के आधार पर क़ैद की गईं तो उन्हें यह भी मालूम होना चाहिए था कि किस पाप का दंड भोगना पड़ रहा हैं। जब अपराधी को दंड के सम्बन्ध में बता दिया जाता है। अपराध बताने का कारण यह होता है

ताकि आगे वह ऐसा अपराध न करें। परन्तु आवागवन के सिद्धान्त के मानने वालों को अपने अपराध का ज्ञान नहीं होता इसके अतिरिक्त इसका भी ज्ञान नहीं होता कि किन अच्छे कामों का फल उन्हें मिल रहा है जिसके कारण वह सुख से जीवन व्यतीत कर रहे हैं। जिन आत्माओं को पेड़ पौधे पत्थर इत्यादि में क़ैद किया जाता है उन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता। इसके अतिरिक्त यदि कोई आत्मा पत्थर से निकल कर मनुष्य के शरीर में प्रवेश करे तो उसे इसका भी ज्ञान नही होता कि वह पहले पत्थर में निवास करती थी अब यदि वह आत्मा शरीर में प्रवेश करने के पश्चात उस पाप से बचना चाहे जिसके कारण उसे पत्थर में प्रविष्ट किया गया था तो नहीं बच सकती क्योंकि उसे अपने पाप का ज्ञान ही नहीं है। जिसके कारण उसे दंडित किया गया था।

ऐसे कर्म तथा फल का क्या लाभ जिसके सम्बन्ध में यह भी ज्ञात न हो कि किस अच्छाई के कारण आराम तथा सुख और किस बुराई के कारण दंड भोगना पड़ रहा है। इसी प्रकार प्रलय का भी कोई अस्तित्व नहीं रहता।

हिन्दुओं की पुस्तकों से तथा ग्रन्थों में कुछ अपराधों की सज़ाएं लिखित हैं। और यह बताया गया है कि कौन कौन कौन से पापों के कारण आत्मा कौन कौन से शरीर में प्रविष्ट होगी। उदाहरण के लिए साधु के हत्यारे को अगले जन्म में गाय के शरीर में प्रविष्ट किया जाएगा। अनाज के चारे की आत्मा को चूहे के शरीर में प्रविष्ट किया जाएगा । तथा पानी के चारे को मेढ़क का रूप दिया जाएगा।

इस सिद्धान्त की कड़ी आलोचना की गई तथा अनेकों अपवाद बताए गए। इस सिद्धान्त की पुष्टि के लिए उसका समर्थन करने वालों के पास कोई तर्क नहीं है जिनको मैंने स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है।

(इमामिया मिशन, लखनऊ, प्रकाशन नं0 675, मार्च 1973)



मजलिसे चेहलुम

cjk, bZlkysl okc

हैदर अब्बास इब्ने नज़ीर हुसैन

बतारीख़ : 31 जनवरी 2013, बरोज़ जुमेरात

बमक़ाम : इमामबाड़ा अबूतालिब, हसनपुरिया,
मन्सूर नगर, लखनऊ

सोगवारान

रज़ा अब्बास, हसन अब्बास, काज़िम अब्बास, मो0 अब्बास,
आशिक़ अब्बास, जाफ़र अब्बास, (पिसरान)
सै0 अख़्तर हुसैन, सै0 रफ़ीक़ हुसैन, (दामाद) व दुख़्तरान

मो0 09307302276



खबर नामा

कमज़ोरी के सबब पाकिस्तान और दूसरे ममालिक, मुल्क को नुक़सान पंहुचा रहे हैं: कल्बे जवाद

क़ाएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद ने सुल्तापुर में पचासा के जुलूस की मजलिस को ख़ेताब करने से पहले सहाफियों से गुफ्तगु की और कहा कि हिन्दुस्तान के आगे पाकिस्तान की कोई हैसियत नहीं है। चीन के नक्सली हमलों में आए दिनों लोग मारे जा रहे हैं लेकिन हिन्दुस्तान चुपचाप रहता है। पाकिस्तान की छोटी सी हरकत को वो अहमियत देता है ये सब इन्तेख़ाबी साज़िश है उन्होंने कहा कि जब तक हिन्दुस्तान अमरीका के दबाव में रहेगा तब तक चीन और पाकिस्तान अपनी हरकतों से बाज़ नहीं आएंगे। मौलाना ने कहा कि अभी हाल में ही पाकिस्तान में 150 शियों को मौत के घाट उतार दिया गया लेकिन हिन्दुस्तान की किसी भी सियासी पार्टी के किसी भी नेता ने उस पर किसी भी तरह का कोई बयान नहीं दिया उन्होंने कहा कि अमरीका और इस्राईल पाकिस्तान और चीन जैसे मुल्कों को बढ़ावा देते हैं और हिन्दुस्तान अमरीका की गोद में खेलता रहता है। पाकिस्तान व चीन की हरकतों का क़ुसूरवार सिर्फ अमरीका व इस्राईल है। दिल्ली में गुज़िश्ता दिनों हुए गैंग रेप के सवाल पर मौलाना ने कहा कि गैंग रेप की सबसे बड़ी घटना गुजरात में हुई थी जिनके मुजरिमों को आज तक कोई सज़ा नहीं दी गयी। गुजरात केस के आगे दिल्ली का केस बहुत छोटा है लेकिन उसपर पूरा देश उबल रहा है। उन्होंने कहा कि पहले गुजरात के मुजरिमों को सज़ा मिले। मौलाना ने क़ानून बनाने के सवाल पर कहा कि इसके लिए इस्लामी क़ानून लागू करने की ज़रूरत है। जिसमें रेप के गुनहगारों को अवामी तौर पर सज़ा मिलनी चाहिए। तभी उस पर कन्टरोल हो सकेगा।

हिन्दुस्तान की दाख़िला पालिसी में मूसाद की दख़ल अन्दाज़ी : मौलाना कल्बे जवाद

पाकिस्तान में शिया और हिन्दु के क़त्लेआम और सरहद पर पाकिस्तान के ज़रिये हिन्दुस्तानी फौज के जवान का सर काट ले जाने के ख़िलाफ मौलाना ने अपने निवास पर प्रेस कान्फ्रेन्स में कहा कि दहशत गरदाना काररवाई के पीछे वहां की हुकूमत अलक़ाएदा और तालिबान पर इल्ज़ाम लगाती है लेकिन उनके ख़िलाफ कोई काररवाई नहीं करती। मौलाना ने पाकिस्तान में शियों के हो रहे क़त्लेआम, सरहद पर हिन्दुस्तानी फौज के जवान का सर काट ले जाने और पाकिस्तानी हुकूमत की ख़ामोशी की सख़्त मज़म्मत की मौलाना ने कहा कि जहां का सद्र खुद मुजरिम हो वो सख़्त क़ानून बनाने या क़ानून पर अमल की बात कैसे सोंच सकता है उन्होंने कहा कि पाकिस्तानी हुकूमत खुद मुजरिम हैं वो क्या किसी को इन्साफ दिलाएगी। मौलाना ने कहा कि सऊदी मौलवी अमरीका और इस्राईल के ख़ेलाफ होने वाले एहतेजाज को ह़राम का फतवा देते हैं और पाकिस्तान की हरकतों पर ख़ामोशी ऐसे अख़्तियार करते हैं जैसे उसमें उनकी रज़ा मन्दी हो। उन्होंने कहा कि यही हाल मुस्लिम देशों का भी है कोई पाकिस्तान में हो रहे हिन्दुओं और शियों के क़त्लेआम के ख़िलाफ कुछ नहीं बोलता।

मौलाना ने केन्द्रीय हुकूमत पर निशाना साधते हुए कहा कि यहां की ख़ारजा पालिसी पर ''मूसाद'' का क़ब्ज़ा है उन्होंने कहा कि यहां की हुकूमत ईरान, इराक़ के उलमा को वीज़ा नहीं देती और सऊदी मौलवियों को गावं गावं जक जाने दिया जा रहा है। हरम के इमाम का नाम देकर देहात में दौरा कराया जा रहा है उन्हीं की वजह से ये ह़ालात ख़राब हो रहे हैं और फिरक़ा वाराना फ़साद बढ़ रहे हैं मौलाना ने कहा कि ये सऊदी मौलवी विरोधी देशों से मिलकर यहां हालात को बिगाड़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि लखनऊ में कुछ साल से हालात ख़राब होने के पीछे सऊदी मौलवियों का हाथ है उनकी हिमायत पाकिस्तान को भी है वो यहां पर लोगों को मुन्तशिर करने का काम करने आते हैं। जब कि मस्जिदे अक़्सा के इमाम को वीज़ा नहीं दिया जाता और मस्जिदे अक़्सा के लिए ये मौलवी आवाज़ नहीं बलन्द करते। और न ही वहां के इमाम की हिमायत करते हैं।

मौलाना ने कहा रियासती हुकूमत शियों के मसाएल को नज़र अन्दाज़ कर रही है उन्होंने कहा कि अफसरान आर० एस० एस० के इशारे पर काम कर रहे हैं इन्तेज़ामिया के एक अफसर के बारे में मौलाना ने बताया कि वो

आर० एस० एस० हिमायती है और जब भी मौक़ा मिला शिया, सुन्नी फसाद कराने की कोशिश करता है उन्होंने कहा कि इस अफसर को बी० जे० पी० मौलवियों के हिमायत हासिल है और जब भी उसको हटाने की बात होती है वो उसकी पैरवी करने लगते हैं। मौलाना ने गुज़िश्ता कुछ दिनों से लखनऊ के हालात पर तश्वीश का इज़हार किया और कहा कि सऊदी मौलवियों की आमद और बी० जे० पी० की दखल अन्दाज़ी ने हालात को बिगाड़ा है उन्होंने कहा कि फूलपुर, इलाहाबाद में भी ताज़ियादारों पर इलाहाबाद इन्तेज़ामिया सख़्ती कर रही है।

इस्राईली फौज और फिलिस्तीनियों के बीच झड़पों में शिद्दत

फिलिस्तीनी अवाम के लिए नया साल भी जिद्दो जोहद से आरी साबित नहीं हुआ, गुज़िश्ता कई दिनों से सहयूनी फौज और फिलिस्तीनियों के दरमियान झड़पों का सिलसिला जारी है। इस दरमियान इस्राईली सरकार ज़राए ने एतेराफ किया है कि मग़रिबी किनारे में सहयूनी अस्करी अड्डों और यहूदी बस्तियों पर मज़ाहमत कारों के हमलों में एज़ाफा हो गया है ता हम ये मसलह जिद्दो जोहद उस हद तक नहीं बढ़ी कि उसे इन्तेफाज़ा क़रार दिया जा सके। सहयूनी रेडियो ने अपनी नशिरयात में हुकूमती ज़राए के हवाले से बताया कि गुज़िश्ता कुछ अरसे के दौरान मग़रिबी किनारे में सहयूनी फौज और फिलिस्तीनियों के दरमियान झड़पों में भी काफी शिद्दत आ गयी है। याद रहे कि नवम्बर में ग़ज़्ज़ा पर इस्राईली बरबरीयत के बाद से मग़रिबी किनारे में इस्राईल की मुख़ालेफत में तेज़ी से सहयूनी हुक्काम को फिलिस्तीनियों की तीसरी इन्तेफाज़ा तहरीक के शुरू होने का शदीद ख़ौफ ला हक़ है। फिलिस्तीनियों के इस्राईल के ख़ेलाफ बढ़ते गुस्से का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि 15 जनवरी की शाम मग़रिबी किनारे के शिमाली इलाक़े तमून में होने वाली झड़पों में एक सौ से अधिक फिलिस्तीनी ज़ख़्मी हुए।

ईरानी फ़ौज ग़ैर मुल्की जासूसी तय्यारे मार गिराएगी

ईरान ने चेतावनी दी है कि आबनाए हर मिज़ में ईरानी फौज अभ्यास के दौरान ग़ैर मुल्की जासूसी तय्यारे निगरानी के अमल से गुरैज़ करें वरना ईरानी फौज इन्हें तबाह कर सकती है। ईरान की आधी सरकारी न्यूज़ एजेन्सी महर के हवाले से राइटर ने बताया कि ये इन्तेबाह ईरान के एक आला फौजी कमाण्डर ने किया है। वाज़ेह रहे कि ईरानी फ़ौज ने दिसम्बर 2011 में भी ऐसी ही दो रोज़ा जंगीं अभ्यास किया था। मग़रिबी ममालिक को ख़दशात ला हक़ हैं कि ईरान अपने न्यू कलयाई प्रोग्राम से एटमी हथियारों का हुसूल चाहता है ता हम हुकूमत ईरान ऐसे इल्ज़ामात को मुस्तरिद करते हुए कहती है कि उसका ये प्रोग्राम पुर अमन मक़ासिदा के लिए है।

बहरिया के तरजुमान कमाण्डर अमीर रास्तगीरी के बक़ौल इन्हीं ग़ैर ममालिक की तरफ से उन जंगी अभ्यास की जासूसी की कोशिशों की इत्तेलाआत दूसरी तरफ सरकारी न्यूज़ एजेन्सी अरनाने रास्तगीरी के हवाले से बताया है कि ऐसी चेतावनी जारी किए जाने के बाद ग़ैर मुल्की जहाज़ जंगी अभ्यास की जगह से दूर हैं क्योंकि टेलीफोन के अनुसार उस दौरान फोरसेज़ ने मोतअद्दिद मीज़ाइलों का कामियाब तजुरबा किया है। रास्तगीरी ने ईरान के अंग्रेज़ी ज़बान के प्रेस टीवी को बताया है कि उन अभ्यास के दौरान क़ादिर करोज़ मीज़ाइल का भी कामियामब तजुरबा किया गया है। उन्होंने बताया कि अभ्यास के दौरान 200 किमी० दूर तक मार कर सकने वाला ये मीज़ाइल कामियाब तरीक़े से अपने टारगेट पर गिरा। ईरानी फौज ने पिछले 28 दिसम्बर को आबनाए हिरमज़ में जंगी अभ्यास की शुरूआत की थी। दुनिया भर में समन्द्र से निकाले जाने वाले ख़ाम तेल का 40 प्रतिशत भाग आबनाए हिरमज़ से ही हो कर गुज़रता है, इसलिए इस समन्द्री रास्ते को इन्तेहाई अहम ख़्याल किया जाता है। ये बात अहम है कि ईरानी हुकूमत इस समन्द्री रास्ते को बन्द करने की धमकी भी दे चुकी है उसका कहना था कि अगर उसके मतनाज़े न्यकिलियाई प्रोग्राम के कारण हमला किया गया है तो वो आबनाए हिरमज़ को बन्द कर सकता है। ता हम हुकूमत ईरान के इस बयान पर अमरीका ने कहा था कि आबनाए हिरमिज़ से गुज़रने वाली, कमरशील टेरेफिक, में ख़लल को ब्रदाश्त नहीं किया जाएगा।